

ईश्वर स्वरूप महाराज्जि अथ

लेखन आमच

स्वामी परमानन्द जीयिन्य

अमरनाथ यात्रा - लीला

संपादिका : प्रभा देवी

शारिका प्रकाशन, दिल्ली



ग्वड़ कथ

अज़ सदगुर महाराज सुन्दिस ज़ा दोहस प्यठ छि अस्य सारी
श्रीमती प्रभा जीयि वछि वालिन्जि हयोत त रुत कांछान यिमव
अरव मोलुल रत्न खटनु बजायि ब्रोन्ह कुन वातुनोव त लोलु
बोछि हत्यन हुन्जि बोछि ओनुख करार ।।

माजि कशीरि हुंध्य अज़ीम सूफी सन्त त गुणमात श्री
परमानन्दन अमरनाथ यात्रायि प्यठ अनुभव पोशि लन्जव सूत्य
शीरमुच्च त पूरमच्च भाव लीला कस सनाह भक्तस छनु व्यज़ ।
पननि अनुभवचि कहवचि प्य० अमि लीलायि हुन्जिन स्वन
लाच्यन गाहबेगाह खारिथ सान्य सदगुर महाराज आस्य पनुनि
दोजि प्यठ नवि आयि मोहर दिथ अमिच भावथ करान । अथ्य
सूत्य रुंगिथ गुयि अकि दोह सदगुरु त फिरुख यि लीला कागज़स
प्यठ । दुह श्रुक्य लीखिथ हयोतहस बययि साम । थरक दिथ
कोरुख शारिका जी फरमान । पम्पोशि अथव सूत्य कर अन्दताम
यि लीला शारिकी दीवीयि पूर । लीला लेखनुक बहानु बन्यव
सबबगार । शारिका जीयि करुनाव सदगुरन अथ्यमन्ज स्वरूप
साक्षातकार ।।

यिथु पाठय रुज्ज यि लीला अरव अहम यादगार । अवमोरव
खोत अथ चाव ज्यादय हना यलि सदगोरन ध्युत हुकुम प्रभाजीयि
त वोनुरक, “प्रभय यि छि रछय, त अथ कर रछय” ।

प्रभाजीयि ति थुव यि पुत्यम्यव पंचाहव वुरियव प्यट् शीरिथ
त पूरिथ त विजि विजि दितुरव अनुभव सुदरुक्क्यव छिकव सूत्य
पनुनिस सुदरस वुसुजार ।।

यिथु पाठय पनुनि अथ लीछमुच यि रछय त तथ्य सूत्य
शारिका दीवीयि हुंदि अथ लीखमुत्य वाक्य श्रुक्य अभी चालि
भक्त्यन निश रोजनु मोरव कोर प्रभाजीयि बोड वोपुकार असि
प्यट । यी नजरि तल थाविथ वातुनाव यि लीला असि ताम ।

असि छि आश जि प्रभा जी करन ब्रोंट कुन ति गाशि
आगरच्यव ज़ुचव सूत्य अज्ञानु गटि मंज हयनु आमत्यन असि
राछय रावट ।।

सदगुरु वारि हुन्द कुकिला

प्रो. मक्खन लाल

सदगुरु महाराज सुन्ध ।

जन्मदोह

१८ अप्रैल

रविवार, १९६३

ॐ

देहग्वफ सच्चिदानन्दलिङ्ग.
मनपीठस् प्यत् बिहित निःसङ्ग.
लोक द्रष्टृतनस् कैलासशृङ्ग. मं० ॥ १ ॥

कन थाव सरस्वती क्य वनन्
वन्न वन्न पान् कुय् ना सनन्
नाम् रूप व्यन् भ्योन् भ्योन् ननन् मं० ॥ २ ॥

त्राहि मां पर यात्रा च कर
हरमोख पन्ननुय पान च वर
ग्वफ म्येन् ग्वफ क्य बगवर मं० ॥ ३ ॥

ग्वद् गणपत्याहक् गणेश
दूर मो ज्ञान् रुजित् कु निश
मूलाधार द्वारक महीश मं० ॥ ४ ॥

ब्रह्मा सु युस हृष्टिकर्तार
 स्वाधिष्ठान पुराहयार
 षट्दत्त षट्मोख ज्ञान कुमार मं० ॥ ५ ॥
 शिवपार फेर कुण्डलिनी
 फेरवञ् प्रण तत्प्र जल कण्ये
 सत् समन्दर स्रञ् वोगण्ये मं० ॥ ६ ॥

अष्टदत्त सु द्राव पम्पोशाढल्
 यूय फेर तोर कुन् मो ज्ञ ढल्
 व्येचार अच्यु रंसार ढल् मं० ॥ ७ ॥

ह्युर ह्युर खस्त न्यूर न्यूर वान्
 दूर प्योमुत् कुक कप्र वृणात्
 गत् प्रावणच्य भोज्ञ कथ त्र बात् मं० ॥ ८ ॥

तीर्थहस्त मां कुञ्च काँह पोदाह
 वीदन त्र कृंकार विन पदाह
 जीवन्मुक्त परमात्मा ॥ मं० ॥ ९ ॥

लीला वि क्य अमरनाथ चीय
देहद्वार सान एकान्त चीय
शाम् दम गवफ के प्रशान्त चीय मं० ॥ १०

नाभिदीप दशदल संगमस
युम्य चावै लुक सत्संगमस
कृष्णसस्थावरजंगमस मं० ॥ ११॥

मन्दिर मुचत् उच्छत् चन्द्रयार
सपनीय तति हरिचन्द्रयार
विजयीश्वरी जन्म जन्म पार मं० ॥ १२॥

कृज् त्रिवित् वात् घृजवोर
लज्मन्तु क प्रिवजटाचवोर
अनाहतमण्डलस्थावत्तवोर ॥ मं० ॥ १३॥

कृयप् प्रोण्ड ह्यत्वात् प्रोण्डवत्
विष्णुद्वयक्रन् जीवयत्
दीव् पूज कर जीवभाव ठल ॥ मं० ॥ १४॥

मंजु वात्ख्यलनस् त ख्येलनस्
पानस् च पानस् मैलनस्
तीलजन तेलस् तैलनस् ॥ म० ॥ १५ ॥

वात्ख्य च वति वति वीरसिरन्
तति धिय न वातान्वीर सिरन्
वर्जवाव सुति बलवीरयिरन् ॥ म० ॥ १६ ॥

मन निष् दूरकरलय विक्षेप
नावित् गणीशस सारलीप्
ज्ञलनय तीय गोस् रतनदीप ॥ म० ॥ १७ ॥

पुशराव पान परमेश्वरस्
वतित रोज मामलीश्वरस्
प्रदिक्षिण केरत तत् मन्दिरस् ॥ म० ॥ १८ ॥

भ्रगतीर्थ यथ कुय स्वर्गदार
वर्ग निष् मशरित मो क्क प्रार
भाव अर्ध योष् पूजा च सार ॥ म० ॥ १९ ॥

रेजलू त्रावित् रीज पल
 पावित निपूानसमो च ठल
 धर्मस् ते कर्मस् सार् फल ॥ म० ॥ २० ॥
 कष्टदीप्ता युस् छु चोदाह भुवन्
 नीलगंगि य्यठ भोज वावजन्
 तति तोर पक्नीय श्रोत दवन् ॥ म० ॥ २१ ॥
 मज्जिल कु मज्ज मज्ज वारयाह
 छोट वनुन् मोट भोज वारयाह
 अक्रिया दारविय यी क्रिया ॥ म० ॥ २२ ॥
 लाजिम् छु यी यी ती वोनुय
 ननवोर वाताषकौरकुनुय
 थकि युस् दपि पंकहावनय ॥ म० ॥ २३ ॥

ईष्टं देष्टुं उत्तमं शेषनाग
 ह्यकस्वयं च तत्तिदिनरातजग
 रागत्रावप्रावमहो वैराग ॥ म० ॥ २४ ॥

त्यागपञ्जकरित् पूञ्जीतरंग
 सत्समृद्धरुकीयचित् तरंग
 पद्मनाभसुष्ठिययिम्तिरंग ॥ म० ॥ २५ ॥

अस्तु अस्तु खस्तु पञ्चालसीय
 सोऽहं भैरवबालसीय
 दुक् युक् न लङ्गि अति लालसूय ॥ म० ॥
 २६

जिह्वरौजभोजजिह्वमरुन्
 गर्भयात्रायु अपोर तरुन्
 सति ये कृत्य ततिय शिव वरुन् ॥ म० ॥ २७ ॥

शो ज़रित् संकल्पनिधि मन
दैश काल रोस्त काल दैश मन
शिहली त ईश्वर नीश्वर मन ॥ म० ॥ २८ ॥

छिय परा पश्यन्ती पश्यन्
मध्यमा वैखरी मा पश्येन्
इच्छा अवस्था कथ तपज्ज्यन् ॥ म० ॥ २९ ॥

भाव प्रमरावतीयि च नाव
मल भभूत कल गृहस्थभाव
शिवपादन् पाम पुषिराव ॥ म० ॥ ३० ॥

रुदमुत् ग्वकि युस शोद्ध भोद्ध
नैत्यद् धीन् तति अष्टसिद्ध
प्राकाशवत् किंहे न गट वध् ॥ म० ॥ ३१ ॥

यस् क प्रतिमा वटकनाथ
 युस् कु भैरव वेताल सात्
 ह्यस् गिरि स्वयंवर वशात् ॥ म० ॥ ३२ ॥
 नंगमोत त्रु हंग्र त मंग्र रोज
 ईश्वर दर्शन प्राब्दभोज
 ईय कर ॥ त्र ध्यान दयगूर सोज ॥ म० ॥ ३३ ॥
 ग्वफि मञ्ज ग्वफि वात् पनजे
 त्राव दीवी त्र दिवता श्रमे
 कृत्य कय न धिमू भवूत् कन्ये ॥ म० ॥ ३४ ॥
 कन्य मञ्ज लाल सुय मन्य मञ्ज
 कोञ् कोञ् कोन्य रुक रोन्त्य मञ्ज
 तप कर त्र देह प्रारुन्य मञ्ज ॥ म० ॥ ३५ ॥

सोऽहं शब्द प्रेम प्रणव
 प्राज्ञा शैखरस त्राव रव
 तालव कभूतर आलव ॥ म० ॥ ३६ ॥
 सहस्रदललयगत्त्र प्राव
 ब्रह्मरन्ध्रस कु निष्कलस्वभाव
 दमचीय दमालि करतू क्राव ॥ म० ॥ ३७ ॥
 पकवुन क दारस मद्य मथान्
 थान गौ च यति भयं हान वथान्
 समाधि मञ्ज तूथ ह्यु व्युत्थान् ॥ म० ॥ ३८ ॥
 पननुय कु पान् पानस त्रमुन्
 तूत् त्रमुन् तूत् समुन् तूत् शमुन्
 प्रत् वोहुन लोलनार प्रत् हमुन् ॥ क० ॥
 ३६।

युत्य धान कुय न प्रोवमुत यमन्
तिम वूय जौन भ्रून्प्रभाव इमन्
परमात्मा पानि सभनुन् ॥ म० ॥ ४० ॥

तति फोरूनुन् प्रनाहत नाद्
स्वप्न प्रन्त सुषुम्णाधि धाद्य
तुर्या त् तुर्यातीत समाद्य ॥ म० ॥ ४१ ॥

जिस्में जोगी प्रौर पढा

जाग्रत स्वप्न पिंगल इडा
उतरा वहाँ कोई ना चडा ॥ म० ॥ ४२ ॥

भौरा कमल में जब बडा
प्रपना सिबानी सब गढा

और था कोई नाही बडा ॥ म० ॥ ४३ ॥

कीरित् इडायि कित्य संगमस
रसपूर्ण मय रवेत्मुत वस
तति आद् करान् छिय यसभ तस॥म०
४४॥

गवफ चूल च त्रवित् तस शिवस
तस रोस रोजिय न कांह द्यतस
पान् पुषिरावुन दुय द्यु तस॥म०॥४५॥

शेव शेव दयान् निशि मो च ढल्
चू चम चिय प्रकृत पुरुषसम् ढल्
कोर् यि चित्रकार मायायि द्यल्॥म०॥४६॥

यव किम् शिव ज्ञानक् ज्ञोपोर
रोजूनय न कुन्य पापम द्य भूस्
भवसर सार शेव शेव तौर॥म०॥४७॥

मुन गच्छन् कुय च्यन्मात्रा

ज्ञानियस् कुय बुद्धिम् यात्रा

पनन्यीय वनन्यीय कुय वारता ॥ म० ॥ ४८ ॥

तप्त नौ द्वार वात नौ दल

वतित् जलिय जन्मूच वदल

देहयात्रा गयि यी सुफल ॥ म० ॥ ४९ ॥

देह कुय वौन्मुत् देव द्वार

संसार जंगलुक् देवद्वार

ध्यान कर ध्यान ज्ञान देह उद्धार ॥ म० ॥ ५० ॥

फैरुन कुय न प्रदू त्रिभवनस्

वातित् यथ विष्णुभवनस्

यमलस् तू कमलस् भवनस् ॥ म० ॥ ५१ ॥

बुज्जनस् कु जलनिर्मल उज्ज्वल
नित्य न्येम् युस् भवानिबाल तल
बुदिमन् वातु भवानिबाल तल ॥ म० ॥ ५२ ॥

भर्गपादपूज संसर्गन्यैर
चमकीय तीज कासीय मन्यर
जलनय च्च जन्मजन्मकु भखैर ॥ म० ॥ ५३ ॥

भर्ग दीफ नौ दोर्गाह च मान
स्वर्गलोककीय कीय तस् नमान्
यष्टदीवी क पनत्पीय प्रमान ॥ म० ॥ ५४ ॥

देवीस्वपार्वती सती
मांज् यस वजिक् मीनावती
शेव तस् वरनस् प्राव ततीय ॥ म० ॥ ५५ ॥

शैव शक्तप्रकं नाम रूप भ्युन्
पान् भोजं पान् क्या भ्युन वनुन्
परमानन्द पानरु भनुन् ॥ म० ॥ ५६ ॥

हे दीवीम्य दया करुम्
कर्म फल बुद्धितप म्य वरुम्
हर हर हर पाप शाप हरुम् ॥ ५७ ॥
मन् स्थिर कर पूजोन् प्रभू ॥ ५७ ॥

मन्त्र पर शिव शम्भू
मन् चिर कर पूजोन् प्रभू ।
मन्त्र पर शिव शम्भू
मन् चिर कर पूजोन् प्रभू ॥



